thearyasamaj.org

श्री विनय आर्य जी, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15, हनुमान रोड,
नई दिल्ली -1

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९६,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११४

वर्ष-13 | अंक-3 | ज्येष्ठ शु. 4 से अ. कृ. 3 सं. 2071 वि. / 1 से 15 जून 2014 / अमरोहा, उ.प्र. | पृ.- 10 | प्रति- 5/-

कृपया पृष्ठ संख्या --4-- देखिए

दो देशों में होगा २०१४ का
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रकाश आर्य
नई दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में इस वर्ष आगामी आर्य महासम्मेलन सिंगापुर में 1 व 2 नवम्बर को, तथा थाइलैण्ड (बैंकाक) में 8 व 9 नवम्बर को होगा। उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा सन् 2006 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उसी श्रृंखला में अभी तक 7 सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं, जिनमें से पांच अमेरिका, मॉरिशस, सूरानाम, हालैण्ड एवं दक्षिण अफ्रीका में तथा दो भारत वर्ष में हो चुके हैं।

सार्वदेशिक सभा की ओर से सिंगापुर व बैंकाक में आगामी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। कार्यक्रम में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति अभी से अपना नामांकन 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1' अथवा 'श्री आर्य सुरेचन्द्र अग्रवाल, उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा, 12, क्रिसेन्ट, थलतेज हाइवे, अहमदाबाद' पर अथवा प्रकाश आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, इन्दौर रोड, महू (म0प्र0) के पते पर प्रेषित कर सकते हैं।

भाजपा की ऐतिहासिक जीत

पूरे देश में लहराया मोदी का परचम

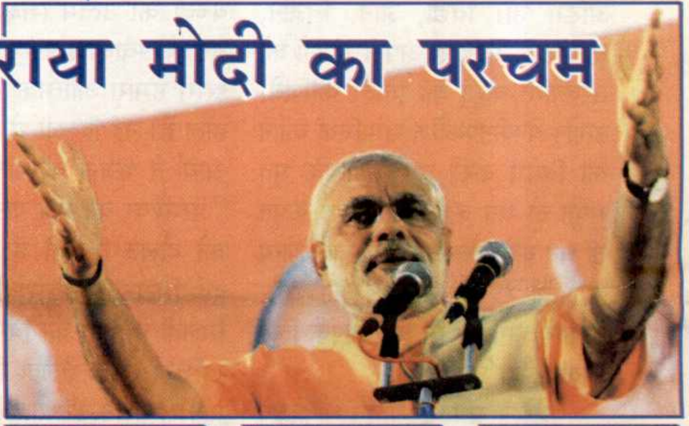

चुने गए आर्य विचारधारा के अनेक सांसद

कोटि-कोटि बधाई

स्वामी सुमेधानन्द जी (सीकर- राजस्थान)

श्री अश्विनी चोपड़ा (करनाल- हरियाणा)

डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत- उ.प्र.)

श्री प्रवेश वर्मा (पश्चिमी दिल्ली)

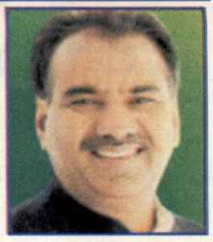

श्री कंवर सिंह तंवर (अमरोहा- उ.प्र.)

दीक्षान्त समारोह १३ जून से

धारणा याज्ञिक
शिवगंज (सिरोही) राज0।

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज का 160वां वार्षिकोत्सव एवं द्वितीय समावर्तन (दीक्षांत) समारोह 13 से 15 जून तक होगा। इस अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान व संन्यासीगण पधार रहे हैं। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा समारोह में विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाएंगे।

प्रखर पत्रकार शिव कुमार गोयल नहीं रहे

पिलखुआ (उ0प्र0)। जानेमाने लेखक व आर्यजगत के प्रखर पत्रकार शिवकुमार गोयल (75) के आकस्मिक निधन से आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गयी।

31 अक्टूबर 1938 को दिल्ली के निकटवर्ती पिलखुआ में जन्मे श्री गोयल को बचपन से ही धर्म व मर्यादा के संस्कार मिले। उन्होंने लगभग 17 वर्ष की आयु से ही हिन्दी की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं व एजेंसियों में अपने लेख व समाचार लिखे। श्री गोयल जी का आवास अटलविहारी वाजपेयी, श्रीमती ललिता शास्त्री व पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का आतिथ्य कर चुका है। हार्दिक श्रद्धांजलि।

२३ से योग शिविर व यज्ञ

झज्जर (विक्रमदेव शास्त्री)। आत्मशुद्धि आश्रम के तत्वावधान में निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं वृहद् यज्ञ का आयोजन 23 से 29 जून तक किया जाएगा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, योग निर्देशक आचार्य राजहंस मैत्रेय व आसन-प्राणायाम प्रशिक्षक योगनिष्ठ सत्यपाल वत्स रहेंगे।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर १ से

हरिद्वार। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के तत्वावधान में आर्य वीर दल के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर 1 से 15 जून तक गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में सम्पन्न होगा।

केरल में भी हुई आर्ष गुरुकुल की स्थापना

सुमन कुमार वैदिक
मालक्काड़।

केरल प्रान्त में ग्राम बेल्लीने झी, पो0, जि0- मालक्काड में 'पं0 लेखराम' के नाम से स्थापित प्रथम आर्ष गुरुकुल का उद्घाटन 8 जून को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी प्रवणानन्द मुख्य अतिथि रहे। गुरुकुल के दूरभाष नं0 : 09562529095 एवं 094466017440 पर प्रवेश हेतु संपर्क किया जा सकता है।

thearyasamaj.org

६०वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

प्रतिनिधि
सहारनपुर (उ.प्र.)

तीन दिवसीय 60वें वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर होशंगाबाद से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने आर्यसमाज के खचाखच भरे प्रांगण में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि माता-पिता अपने बच्चों को संस्कार दें और संस्कार अडिग हों। विद्या, ज्ञान, विज्ञान, धार्मिकता आदि से अपनी संतानों को संस्कारित करने का प्रयत्न कीजिये। उन्होंने येनकेनप्रकारेण सम्पत्तियां बनाने का विरोध करते हुए कहा कि पूत सपूत तो धन क्यों संचय, पूत कपूत तो धन क्यों संचय अर्थात् संतानें योग्य होंगी तो स्वयं धन बना लेंगी अगर अयोग्य होंगी तो वो धन आपके लिए विवाद पैदा करेगा।

बरेली से पधारे पंडित भानुप्रताप सिंह ने अपने भजनों के माध्यम से कहा कि "जिस घर में जाएं बात एक दूसरे की मानी, उस घर में नहीं आती है कोई परेशानी।" उन्होंने कहा जहां पति, पत्नी का प्यार होगा वहीं लक्ष्मी होगी। जहां पत्नी पति पर तनी रहेगी वहां पतन ही होगा। पत्नी को पति को पतन से बचाना चाहिये न कि उसे पतन की ओर प्रेरित करना चाहिए। आगे कहा कि बच्चों को उत्तम शिक्षा देकर आर्य बनाओ। स्वाध्याय जरूर करना चाहिये इससे हमारा आत्मिक विश्वास पैदा होता है। नई दिल्ली से पधारी सुदेश आर्या ने भजनों के माध्यम से कहा "परमेश्वर का गुण गाने से खुशियों की दौलत मिलती है, दुखियों का दर्द मिटाने से खुशियों की दौलत मिलती है औरों की बिगड़ी बनाने से खुशियों की दौलत मिलती है।" मंच संचालन डॉ. राजवीर सिंह वर्मा ने किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता वैशाली विहार के प्रधान तोमर ने की।

इस अवसर पर हरिदत्त शर्मा, अवनीश आर्य, विकास आर्य, कर्णवीर आर्य, प्रियवर्त शास्त्री, दीपक, पंकज, ऋषिपाल, पूनम, प्रेमिका, प्रेमसागर, ओमप्रकाश आर्य, बारूराम शर्मा, डॉ. राजवीर वर्मा, अनिल मारवाह, प्रकाशचंद वशिष्ठ, सुरेन्द्र चौहान, रघुवीर कौर, सुमन आर्य, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्य, सुरेन्द्र पुण्डीर, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुमन गुप्ता, विजय कुमार गुप्ता, सविता, रामकिशोरी सैनी, राजकुमार आर्य, अनिता आर्य, प्रताप सिंह, ऋषिपाल सिंह, राधेश्याम, योगराज शर्मा, मीना वर्मा, रश्मि गर्ग, रविन्द्र आर्य, यशपाल सिंह एडवोकेट, डॉ. एस.के. मैनी, सुधीर पंवार व सेवाराम आदि रहे।

सही कर्मकाण्ड के अभाव में प्रभु प्राप्ति असंभव : डॉ. प्रियंवदा

सुमन कुमार वैदिक
शामली (उ.प्र.)

आर्यसमाज शामली का 130वां स्थापना दिवस 31 कुण्डीय यज्ञ द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेदभारती ने कहा कि ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना शास्त्रोक्त रीति से करनी चाहिए। सही कर्मकाण्ड के अभाव में प्रभु की प्राप्ति असंभव है।

शास्त्रों में वेदाभ्यास, तप, ज्ञान, विवेक, वैराग्य, षट्क सम्पत्ति, मुमुक्षुत्व आदि मुक्ति के साधन बताये गये हैं। आज धर्म अधर्म में, पाप-पुण्य में हिंसा-अहिंसा में संकर हो चुका है। जब तक हम वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द की छत्र छाया के नीचे नहीं आयेंगे तब तक ये संकर (मिश्रण) बने ही रहेंगे न हमारा व्यक्तिगत सुधार होगा और न ही राष्ट्र की उन्नति होगी। मध्याह्न कालीन सभाओं में पारिवारिक सुख-शान्ति के उपाय बताये। वेद के- **इमे गृहाः मयोभुवः ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः पूर्णावामेन तिष्ठन्तः ते जानन्तु आयतः** इस मंत्र द्वारा बताया कि हमारे घर के सदस्य ऊर्जावान बलवान हों। हमारे घरों में दूध घी की कमी न हो। हम अपनी सन्तानों को उत्तम शिक्षा दें। आज धन कमाने के चक्कर में अपने बच्चों को उचित शिक्षा उचित संस्कार नहीं दे पाते। इसमें सुलभा शास्त्री जी ने प्रभु भक्ति के भजन। "ये महकती बगिया ये मस्त बहारें, उस प्रभु का पता दे रहे हैं सभी। शुभ सदाचार कर्त्तव्य प्यार से घर को स्वर्ग बनाना। जिस घर में हो प्यार हो पितरों का सत्कार खुश रहते हों नर-नार वो घर कितना सुन्दर है।"

आर्यसमाज के संरक्षक रघुवीर सिंह जी ने सबको धन्यवाद दिया तथा पं पूर्णचन्द आर्य सहित सभी ने आचार्या जी का अभिनन्दन किया।

आज ही मंगाएं
दयानन्द सप्तक
(सवैया संग्रह)

कवि- वीरेन्द्र कुमार राजपूत
प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी,
निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ०प्र०)
दूरभाष : 05922-262033
मूल्य : तीन सौ रु० प्रति सैंकड़ा

वर्गीकृत विज्ञापन

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के विज्ञापनों के लिए तुरंत सम्पर्क करें। चलभाष- 09412139333

आवश्यकता है

◆ आवश्यकता है आर्यावर्त केसरी के लिए देशभर में प्रचार-प्रसार एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की। वेतन योग्यता व कार्यक्षमतानुसार। सम्पर्क करें। -सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) मोबा. : 09412139333

◆ आवश्यकता है आर्यावर्त प्रिंटर्स के लिए एक सहायक प्रबंधक की। वेतन योग्यता व कार्यक्षमतानुसार। तुरन्त सम्पर्क करें।
-प्रबन्धक, आर्यावर्त प्रिंटर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कॉलेज, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) मोबा. : 09412139333

मुद्रण/प्रकाशन

◆ हर प्रकार के पोस्टर, पम्फलेट, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर आदि के मुद्रण एवं प्रकाशन की उत्तम व्यवस्था। सम्पर्क करें। -आर्यावर्त प्रिंटर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कॉलेज, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) मोबा. : 09412139333

साहित्य व सामग्री

◆ हर प्रकार के वैदिक आर्ष साहित्य तथा ऋतु अनुकूल हवन की उत्तम सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
-हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता, उपदेश एवं प्रचार विभाग, कार्या.काली पगड़ी, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) फोन : 05922-263412

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

◆ योग शिविर लगवाने हेतु सम्पर्क करें। -योगाचार्या श्रीमती सरोज शर्मा, दीपक एपार्टमेंट, मदनगढ़ी रोड, छतरपुर, नई दिल्ली चलभाष : 08800502626

◆ योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने हेतु सम्पर्क करें। योगाचार्य सूर्यदेव आर्य (मुख्य प्रशिक्षक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, हरियाणा) सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद-126102 (हरियाणा) मो० : 9416615536] 9416715537

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक- 15 जून से 15 जुलाई 2014 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं।
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- 09424471288, 09907056726
आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)

आज ही मंगाएं
दयानन्द सप्तक
(सवैया संग्रह)

कवि- वीरेन्द्र कुमार राजपूत
प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी,
निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ०प्र०)
दूरभाष : 05922-262033
मूल्य : ४/-
(तीन सौ रु० सैंकड़ा)

सन् १९०९ में स्थापित
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी
पत्रालय : कन्या गुरुकुल, सासनी (हाथरस) उ०प्र०- २०४१०४

प्रवेश प्रारम्भ

◆ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ◆ विद्याविनोद प्रथम वर्ष (11), उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष (11) ◆ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। ◆ विद्यालंकार/ वेदालंकार प्रथम वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष। ◆ आचार्य प्रथम वर्ष। ◆ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा। ◆ आई0टी0आई0 (एन0सी0वी0टी0) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा 10 विज्ञान विषय सहित/ इण्टर मीडिएट उत्तीर्ण) एवं कटिंग स्वीईंग (कक्षा 8 उत्तीर्ण) एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे। ◆ प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा ◆ छात्रावास व्यवस्था।

➔ रु० १५०.०० भेजकर नियमावली मंगाएं। कन्या गुरुकल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।
डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्य
मोबा. : 09458480781, 09627040999, 09258040119

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

मूल्य ६०/- किलो

रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित
शुद्ध हवन सामग्री

हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता - उपदेश विभाग
कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५९२२-२६३४१२

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.aryasmaj.com

अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

thearyasamaj.org

सभी समस्याओं का समाधान है वेदों में : डॉ. आर्य

राकेश चड्ढा
कोटा (राजस्थान)

आर्यसमाज विज्ञाननगर में डॉ० अशोक कुमार आर्य- केसरी।

वेदों में वर्तमान युग में व्याप्त सभी समस्याओं का समाधान विद्यमान है। परमपिता परमेश्वर ने मनुष्य के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान वेदों में प्रदान किया है। यह बात अमरोहा (उ.प्र.) से पधारे मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा व एसोशिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष- राजनीति विज्ञान विभाग ने आर्यसमाज विज्ञान नगर के सभागार में आयोजित वैदिक सत्संग में कही। उन्होंने कहा कि परिवार तथा समाज में समन्वय, विश्व शांति एवं विश्व बंधुत्व जैसे विषयों में जो गंभीर चिंतन वेदों में उपलब्ध है वह अन्यत्र नहीं है। भौतिक परितापों से निवृत्ति, प्रदूषण मुक्त पृथ्वी वैदिक चिंतन की परम्परा का ही प्रतिफल है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्डा ने कहा कि आर्यसमाज सेवा कर संसार के उपकार का संदेश देता है। सभी प्राणियों की उन्नति चाहता है। समाज में व्याप्त भ्रान्तियों का निवारण कर सकारात्मक सोच केवल आर्यसमाज ही दे सकता है। विशिष्ट अतिथि अरविन्द पाण्डेय प्रधान महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा ने कहा कि स्वाध्याय से कुटिल भावनाएं दूर होती है और श्रेष्ठ विचारों का संचार होता है।

आर्यसमाज के मंत्री राकेश चड्डा ने बताया कि कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के उपरान्त आयोजित सत्संग में अमरोहा से पधारी माता शकुन्तला आर्या ने ईशवंदना का भजन प्रस्तुत किया।

आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस. दुबे ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. के.एल. दिवाकर, अशोक अग्निहोत्री, राजुल रस्तोगी, अनिल दुबे, दिनेश शर्मा, अनीता शर्मा, गायत्री दुबे सहित अनेक स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

विद्यालय परिसर में पक्षियों के लिए परिण्डे बांधने का दृश्य- केसरी।

डीएवी प्री-प्राइमरी स्कूल के बच्चों ने बांधे परिण्डे

अरविन्द पाण्डेय
कोटा (राजस्थान)

प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए डीएवी पब्लिक स्कूल तलवण्डी, कोटा के प्री-प्राइमरी सेक्सन में नन्हे बच्चों के मध्य जिला आर्यसमाज, कोटा ने पक्षियों को पानी के लिए मिट्टी के परिण्डे बांधे।

इस अवसर पर जिला आर्यसमाज, कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्डा ने कहा कि ईश्वर के बनाए पक्षियों के लिए गर्मी में परिण्डे बांधकर नियमित पानी भरना सत्कर्म है।

इस अवसर पर डीएवी पब्लिक स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने बच्चों को पानी का महत्व बताया। इस अवसर पर डीएवी पब्लिक स्कूल एलएमसी सदस्य डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, अरविन्द पाण्डेय, उषा परमार, अनिता उतरेजा आदि उपस्थित थे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गायत्री मंत्रोच्चार के साथ परिण्डे बांधकर नियमित दाना-पानी डालने का संकल्प लिया।

विश्व कल्याण-जीव कल्याण हेतु सप्रक्रान्ति अभियान का शंखनाद

ईश्वर दयाल माथुर
जयपुर।

20 अप्रैल को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आध्यात्मिक सप्र क्रान्ति अभियान प्रारंभ हुआ। नगर के मानसरोवर क्षेत्र में सैक्टर-34-35 के महर्षि अरविन्द पार्क में अग्निहोत्र विशेष आहुतियों के साथ सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने उद्बोधन दिया कि संगतिकरण, दान, जड़ तथा चेतन देवों की पूजा है। विश्व कल्याण का यज्ञ ही प्रमुख सोपान है। यज्ञोपरान्त समागम को संबोधित करने वाले विशिष्ट जन आर्यसमाज मानसरोवर के प्रधान अर्जुन देव कालड़ा, सरोज कालड़ा, उपप्रधान ईश्वर दयाल माथुर एवं प्रेम प्रकाश शर्मा सपत्नीक मुख्य यजमान रहे। नगर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. यादराम के भजनों का अनुकूल सन्देश गया।

इसी प्रकार के आयोजन नगर के अन्य स्थानों पर किए जाने का भी संकल्प लिया गया।

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित संस्कृत व्याकरण पर प्रकाशित लघु ट्रैक्ट- **ब्रह्मराशि**
मूल्य : 300/- सैंकड़ा
आज ही मंगाएं
दूरभाष : 05922- 262033

वर्गीकृत विज्ञापन

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के विज्ञापनों के लिए तुरंत सम्पर्क करें। चलभाष- 09412139333

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल, आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली में नवीन सत्र 2014-15 के लिए 30 अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ हो गये हैं। प्रवेश के इच्छुक छात्र की योग्यता 5वीं पास होनी चाहिए। लिखित एवं मौखिक परीक्षा देना अनिवार्य हैं। गुरुकुल में संस्कृत, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी, कम्प्यूटर इत्यादि विषय पढ़ाये जाते हैं, जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

-आचार्य देवेन्द्र वर्णी
आर्य गुरुकुल, आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55
दूरभाष- 011-23514517, 8510995003

आर्ष गुरुकुल आर्यनगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली

(ओ३म्)
॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात्॥

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन वैदिक आर्ष-परम्परा के संवाहक **गुरुकुल प्रभात आश्रम, उत्तर प्रदेश** में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 26 जून से 30 जून 2014 तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पंचम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं 10 वर्षीय होनी चाहिए। प्रवेश-परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही होगी। लिखित-परीक्षा में 60 प्रतिशत प्राप्तांक छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होगा। विशेष जानकारी के लिये **आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ** से सम्पर्क करें।
दूरभाष संख्या- 09758747920, 09719325677
निवेदक :- प्रबन्धक, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ-250501 (उ.प्र.)

आर्य गुरुकुल सेवा समिति द्वारा संचालित

आर्य गुरुकुल, एरवा कटरा (औरैया) उ.प्र.

प्रवेश प्रारम्भ

सत्र 2014-15 हेतु ब्रह्मचारियों का प्रवेश 15 मई से प्रारम्भ हो गया है। विद्यालय उ.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त है। सात वर्षीय पाठ्यक्रम, परीक्षाएं सर्वत्र मान्य, वेद, दर्शन, संस्कृत व्याकरण, साहित्य, हिन्दी गणित, कम्प्यूटर, अंग्रेजी, धनुर्वेद सहित सभी विषयों के पठन-पाठन की व्यवस्था अनुशासन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान, सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण, स्थान सीमित है। कृपया शीघ्रता करें। निर्धन परिवारों के योग्य मेधावी छात्रों को शुल्क में छूट का प्रावधान।

आचार्य राजदेव शास्त्री, प्रधानाचार्य
मोबा. : 9411239744

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो...

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- **05922-262033, 09758833783**

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक आठवां-नवां परिचय सम्मेलन

१५ जून २०१४, प्रातः १० बजे- आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म०प्र०)

२० जुलाई २०१४, प्रा: १० बजे- आर्यसमाज, कीर्तिनगर, नई दिल्ली

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) द्वारा आरम्भ किए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के आठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। यह सम्मेलन **रविवार, 15 जून** 2014 को प्रात: 10 बजे **आर्यसमाज मल्हारगंज**, इन्दौर (म०प्र०) में, व नवां सम्मेलन **रविवार, 20 जलाई, 2014 को प्रात: 10 बजे आर्यसमाज कीर्तिनगर**, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय (मोबा. : 09540040339- विजय आर्य) से अपना डाक का पता भेजकर, मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम एक सम्मेलन के **300/- (तीन सौ रुपये)** व दोनों सम्मेलनों के लिए **600/- (छ: सौ रुपये)** का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुनदेव चड्ढा**
मंत्री	**महामंत्री**	**राष्ट्रीय संयोजक**
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	अर्जुनदेव चड्ढा
(09826655117)	(09958174441)	(094141487428)

पंजीकरण सं० ।। ओ३म्।। रसीद सं०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 दूरभाष:-011-23360150, 23369559, फैक्स: 23343737
Email : aryasabha@yahoo.com Web.:www.delhisabha.com

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा (पंजीकरण प्रपत्र)

फोटो
युवक/युवती

1. युवक/युवती का नाम.......................................
2. आयु/जन्मतिथि.......................................गौत्र.......................
   समय...........................स्थान.......................................
3. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य).......................................
   ....
4. रंग...........................वजन...........................लम्बाई...........................
5. युवक/युवती सेवारत/व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता.......................................
   ....मासिक आय.......................
6. (क) पिता/संरक्षक का नाम.......................................मासिक आय.......................
   पूरा पता.......................................
   ....
   टेलीफोन...........................मोबा...........................ईमेल...........................
   (ग) व्यवसाय एवं पता.......................................
   ....
7. पारिवारिक विवरण :
   (क) भाई...........................विवाहिता...........................अविवाहिता...........................
   (ख) बहन...........................विवाहिता...........................अविवाहिता...........................
8. मकान निजी/किराये का है.......................................
9. किस आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं.......................................
10. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें).......................................
11. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) चिन्ह लगाएं : विधुर ☐ विधवा ☐ तलाक ☐
12. विशेष:किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में दें.......................................
    ....

दिनांक........................ पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट : 1 विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
2-आप इस फार्म को www.delhisabha.com से डाउनलोड कर भेज सकते हैं।
3-इस फार्म की जेरोक्स प्रति भी मान्य होगी।

आओ विचार करें

कैसे हो वैदिक संस्कृति की रक्षा

पं० उम्मेद सिंह विशारद

आज जब अंग्रेजों को भारत छोड़े 66 वर्ष हो गये हैं, उनके जाते ही उनकी पाश्चात्य संस्कृति को भी चला जाना चाहिए था, किंतु वह भारत पर और भी अधिक प्रभावी हो गयी। कारण हमने अंग्रेजों को भगाने के लिए आन्दोलन तो किया, परन्तु पाश्चात्य संस्कृति को भगाने के लिए कुछ नहीं किया, अपितु पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर भारतीयों ने रग-रग में समा लिया। आज पाश्चात्य संस्कृति व संस्कारों ने हमारी वैदिक संस्कृति को अधमरा कर दिया है। वैदिक संस्कृति की रक्षा करना आज हमारी सबसे बड़ी चुनौती बन गयी है। भारत विश्वगुरु बनने की बजाय, पाश्चात्य संस्कृति का गुलाम बन गया है।

युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने इस चुनौती को स्वीकार करके वैदिक आर्ष संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए अपना बलिदान कर दिया था। आज उनके द्वारा बनाया गया आर्यसमाज वैदिक संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए उसमें प्राण फूंक रहा है।

भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों के संपर्क में आयी। कभी मुगलों के, कभी अंग्रेजों के संपर्क में आयी। सभी ने इसको रोंदने का कार्य किया, किंतु भारतीय संस्कृति झुकी नहीं, अपितु अन्य संस्कृतियों को भी प्रभावित करती रही। यही कारण है कि आज विश्व में अनेक संस्कृतियां, जो उत्पन्न हुई थीं, उनका नामलेवा भी नहीं है। एक भारतीय संस्कृति ही ऐसी है, जो विगत पांच हजार वर्षों से अनेक संकटों से जूझते हुए भी आज तक जीवित है।

यदि जितना परिश्रम हमने अंग्रेजो को निकालने में किया, उसका आधा भी अपनी भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने में करते, तो आज यह स्थिति न होती। वास्तव में भारत में धर्माचार्यों ने संस्कृति का प्रचार तो किया, किंतु दुकानदारी व स्वार्थ के रूप में वैदिक संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े अनेक रूप में भारतीयों को परोसा। और भारत के बुद्धिजीवियों व युवा वर्ग दिशाहीन होकर सत्य मार्ग न मिलने के कारण उधर ही झुकता चला जा रहा है। यही कारण है कि आज विदेशों में नाचगाने को संस्कृति समझ लिया है। भारत में भी अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों व रूढ़ी परम्पराओं व काल्पनिक मान्यताओं को संस्कृति का नाम दिया जा रहा है। संस्कृति का वास्तविक स्वरूप ईश्धवरीय धर्म ईश्वरीय सृष्टिक्रम व ईश्वरीय संविधान वेदों की मान्यता है।

सुझाव :

1. आर्यसमाज के विशाल संगठन को आपसी मतभेद भुलाकर, भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए आन्दोलित होना पड़ेगा।

2. आर्यसमाज को भारत की शिक्षा-पद्धति में वैदिक आर्ष-ग्रन्थों का व सत्यार्थ प्रकाश के दस समुल्लासों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य कराना पड़ेगा।

3. राजनीति में आर्य विद्वानों को अधिक से अधिक प्रवेश कराना पड़ेगा।

4. आर्य नेतृत्व को अनिवार्य करना पड़ेगा कि प्रत्येक आर्य परिवार में से एक बच्चा गुरुकुल में अवश्य प्रवेश पाए।

5. भारत वर्ष में समय-समय पर जो ज्वलंत समस्याएं पैदा होती रहती हैं, उन समस्याओं को एकरूपता में उठाकर आन्दोलन करना पड़ेगा। मीडिया को आधार बनाना पड़ेगा।

अन्त में मुझे यह कहना है कि विश्व में वैदिक आर्ष संस्कृति को केवल आर्यसमाज संगठन ही बचा सकता है। यदि हम आर्य सोते रहे, तो आने वाला कल ऐसा भी आ सकता है कि भावी पीढ़ी वैदिक संस्कृति की एक झलक देखने को भी तरसना पड़े। आइए अपनी वैदिक आर्य संस्कृति को बचाने के लिए हम सजग हो जाएं।

-वैदिक विचारक, उत्तराखण्ड
मोबा. : 9411512010

thearyasamaj.org

आर्यसमाज की उन्नति कैसे हो?

महर्षि दयानन्द ने ऋषि समाज की स्थापना एक प्रगतिशील तथा क्राँतिकारी संगठन के रूप में की थी परन्तु आजकल आर्यसमाज केवल हवन यज्ञों तक ही सीमित हो गया है। इसलिये पाखंड और अन्य विश्वास खूब बढ़ रहे हैं। इसको वैदिक सिद्धांतों का प्रचार भी करना चाहिये। वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि तस्य प्रतिमा न अस्ति। चारों वेदों में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें कहा हो कि ईश्वर की इस प्रकार की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की जाये। उसे तो निराकार ही बताया है जिसका विस्तृत वर्णन आर्यसमाज के दूसरे नियम में किया गया है। परन्तु आर्यसमाजों के अधिकारी और विद्वान ऐसा कहने से डरते हैं ताकि लोग नाराज़ न हो जाये। इस तरह डरने से वेद प्रचार कैसे होगा? लोगों को यह बताना चाहिये कि ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन पतंजलि मुनि का अष्टांग योग ही है।

आर्यसमाजों को जब मन्दिर का रूप दिया गया है तो प्रातः सायं दोनों समय सत्संग होना चाहिये। छोटा हवन एक ही समय कर सकते हैं। आर्यसमाज के सब सदस्यों को अपना धर्म वैदिक ही लिखना लिखाना चाहिये। महर्षि दयानन्द ऐसा ही चाहते थे क्योंकि हिन्दू तो कोई धर्म नहीं है। हमारे किसी ग्रन्थ में यह नाम नहीं है। हिन्दुस्तान के निवासी होने के कारण ही हम हिन्दू कहलाते हैं। हमारा प्राचीन नाम भी आर्य ही है। इसीलिये महर्षि दयानन्द ने संस्था का नाम आर्यसमाज रखा था। उड़ीसा के स्वामी धर्मानन्द जी ने 200 परिवारों को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर इस धर्म की स्थापना कर दी। आर्यसमाज के छटे नियम में कहा है संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस नियम का पालन करने से ही जनता के लोग आर्यसमाज से जुड़ेंगे।

आर्यसमाज तो एक आन्दोलन है इसलिए समाज सुधार तथा देश उद्धार का आन्दोलन करता रहेगा तभी जीवित रहेगा आर्यसमाजों को मन्दिर से बाहर निकलकर भी कॉलोनी में हवन सत्संग के कार्यक्रम करने चाहिये, तभी जनता आर्यसमाज से जुड़ेगी। आज मीडिया में महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज का नाम तक नहीं है जबकि पाखंड का प्रचार करने वाले कई समाचार पत्र तथा टी.वी. चैनल है। आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। सब आर्यों को प्रातः सायं दोनों समय सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये तथा शुभ अवसरों पर घरों में हवन की व्यवस्था करें तभी परिवार भी आर्यसमाजी बनेंगे जो आजकल अधिकांश परिवार आर्य नहीं है। आशा है कि समस्त आर्यजन तथा आर्यसमाजों के विद्वान और अधिकारी निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। इससे ही आर्यसमाज उन्नति के पथ पर चलेगा।

अतिथि सम्पादकीय : *अश्विनी कुमार पाठक,*
सी-२३३, नानकपुरा, नई दिल्ली-२१,
दूरभाष- ०११-२६८७१६३६

अमर शहीदों को शत्-शत् नमन

कम से कम शहादत दिवस पर तो शहीदों को सरकार याद कर ले

• कर्नल तेजेन्द्र पाल त्यागी • राजेन्द्र बगासी

महान क्रान्तिकारी- तात्या टोपे

तात्या टोपे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे। प्रथम स्वतंत्रता सग्रांम के महान विद्रोह में उनकी भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण, प्रेरणादायक और बेजोड़ थी। 1857 में स्वामी ओमानन्द, स्वामी वृजानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, ज्वाला प्रसाद और नाना जी को 3100 रू. दिए थे अग्रेंजो के विरूद्ध सग्रांम प्रारम्भ करने के लिए। उन्होंने यह भी रणनीति बनाई थी कि रूमाली रोटी का एक टुकड़ा एक गांव का चौकीदार दूसरे गांव के चौकीदार को ले जाकर देगा और संदेश होगा कि 10 मई 1857 को चारो तरु से अंगों पर आक्रमण किया जायेगा। ऐसे ही एक छावनी का सिपाही दूसरी छावनी के सिपाही को कमल के फूल की एक पखुंड़ी देगा और संदेश वही होगा।

यह प्रक्रिया पूरे देश में फैलाई जायेगी। इस मुहिम में तात्या टोपे ने एक ऐसे सेनापति को काम किया जिसकी कोई दूसरी मिशाल नहीं है। कानपुर, चरखारी, झाँसी और कोंच की लड़ाइयों की कमान तात्या टोपे के हाथ में थी।

इसके बाद तात्या टोपे का दस माह का अन्तिम जीवन अद्वितीय शौर्य गाथा से भरा जीवन है। लगभग सब स्थानों पर विद्रोह कुचला जा चुका था, लेकिन तात्या ने एक साल की लम्बी अवधि तक मुठी भर सैनिकों के साथ अग्रेंज सेना को झकझोरे रखा। इस दौरान उन्हानें दुश्मन के खिलाफ एक ऐसे जबर्दस्त छापेमार युद्ध का संचालन किया, जिसने उन्हें दुनिया के छापेमार योद्धाओं की पहली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। इस छापेमार युद्ध के दौरान तात्या टोपे ने दुर्गम पहाड़ियों और घाटियों में बरसात से ऊनती नदियों और भयानक जंगलों के पार मध्यप्रदेश और राजस्थान में ऐसी लम्बी दौड़-दौड़ी जिसने अग्रेंजी कैम्प में तहलका मचाये रखा। बार-बार उन्हें चारों ओर से घेरने का प्रयास किया गया और बार-बार तात्या को लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी, परंतु यह छापामार योद्धा एक विलक्षण सूझ-बूझ से अग्रेंजों के घेरों और जालों के परे निकल गया।

तत्कालीन अग्रेंज लेखक सिलवेस्टर ने लिखा है कि हजारों बार तात्या टोपे का पीछा किया गया और चालीस- चालीस मील तक एक दिन में घोडों को दौड़ाया गया, परतुं तात्या टोपे को पकडने में कभी सफलता नहीं मिली। ''झलार पाटन, राजगढ़, ब्यावरा, ईशान गढ़, सरैया घाट, छिंद वाड़ा, पंचमड़ी, निमाड, सतपुरा, असीरगढ़, प्रतापगढ, इन्द्रगढ़ आदि में अंग्रेजों से लोहा लेने के बाद तात्या टोपे परोन के जंगल में पहुंचे। वहां उनके साथ विश्वासघात हुआ। नरवर का राजा मानसिंह अंग्रेजों से मिल गया और उसकी गद्दारी के कारण तात्या को सोते में पकड़ लिए गये। रणबाँकुरे तात्या को कोई जागते हुए नहीं पकड़ सका। विद्रोह और अग्रेंजों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के आरोप में शिवपुरी में तात्या का कोर्ट मार्शल किया गया। कोर्ट मार्शल के सब सदस्य अग्रेंज थे। परिणाम जाहिर था, उन्हें सरेआम 18 अप्रैल 1859 को फांसी पर लटका दिया गया। राष्ट्रीय सैनिक संस्था प्रथम स्वतंत्रा संग्राम के अद्भुत सेनापति तात्या टोपे को उनके शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

हमारी सरकार से मांग है कि कम से कम शहीदों के शहादत दिवस पर अखबारों में उनके बारे में एक सरकारी विज्ञापन तो दे दिया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके बलिदान को भूल न जायें। ऐसा करने से सरहद पर लड़ने वाले सिपाही का मनोबल भी बढ़ेगा और देशभक्ति का जागरण भी होगा। निश्चय ही, शहीदों की शहादत को याद करना उनकी प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है।

आत्म-परीक्षण आवश्यक

महोदय,

वृत्तियां अपने आप में बुरी नहीं होती हैं। सवाल है उनके जुड़ने का। वे देव से जुड़कर सदगुण बन जाती है और दानव से जुड़कर दुर्गुण। यह वैसे ही होता है जैसे निर्मल जल नाली में गिरने से गन्दा हो जाता है। ब्रह्मा काम के देवता हैं। काम की कोख से सृजन का जन्म होता है। इसीलिए ब्रह्मा को सृष्टि कर्ता कहा जाता है। जब काम वासना की [illegible] में फंस जाता है। तो अनर्थकारी व्यभिचारी का [illegible] लेता है। जहां राम का काम लोकमंगल का कारण बनता है, वहां रावण का काम सर्वनाश का कारण।

कंजूस का धन किस काम का? धन परमात्मा की विभूति है। इसलिए इसका निवेश लोकसंग्रह के क्षेत्र में करते रहना चाहिए। धन संग्रह बुरी बात नहीं है, यदि वह समाजहित में नियोजित हो। हम धन के मालिक न होकर उसके ट्रस्टी हैं। व्यक्ति केन्द्रित धन शोषण को बढ़ावा देता है। इसे असुरों के हाथ में नहीं होना चाहिए। कुबेर का खज़ाना देवताओं के लिए था। जब वह रावण के हाथ में चला गया तब सन्तों का उत्पीड़क बन गया। शंकर को क्रोध का देवता माना जाता है। नवसृजन के लिए ध्वंस जरूरी है। सृजन और संहार दोनों सृष्टि के विधान हैं। असंयमित काम को अनुशासित करने के लिए शिव को तीसरा नेत्र खोलना पड़ा था। काम और लोभ क्रियाएं हैं और क्रोध उनकी तीखी प्रतिक्रिया है। आयुर्वेद के अनुसार [illegible], पित्त और कफ के असन्तुलन से ही विभिन्न रोग पैदा होते हैं। काम वात की तरह, लोभ कफ की तरह और क्रोध पित्त की तरह है। इसलिए काम, लोभ और क्रोध को सदैव नियन्त्रण में रखने का प्रयास करना चाहिए।

अतुल कुमार शुक्ला
लाईनपार, मुरादाबाद

जनवाणी

अनूठा है जीवन प्रभात प्रकल्प

महोदय,

आर्यावर्त केसरी का वर्षगांठ विशेषांक मिला। विशेषांक में आर्यसमाज गांधीधाम के विषय में जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई और लगा कि वास्तव में आज भी ऐसे संगठनों व महानुभावों की कमी नहीं, जो मानवता तथा राष्ट्र की अभूतपूर्व सेवा करने का बीड़ा उठाये हैं। मैं आर्यसमाज के महामंत्री श्री वाचोनिधि आर्य, अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल और कुलपिता श्री गिरीश खोसला को साधुवाद देना चाहता हूं, जो इस जनसेवा रूपी मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं। यहा के सभी कर्ता-धर्ताओं को बधाई।

संजय रुस्तगी
केशवपुरम्, दिल्ली

भ्रष्टाचार कम नहीं हो सकता?

महोदय,

मनुष्य के जींन्स में भ्रष्टाचार घुस गया है ये किसी भी दल या नेता के आने से कम नहीं होने वाला है क्योंकि जिन लोगों को मौका नहीं मिलता वे अन्ना हजारे या अरविन्द केजरीवाल का साथ देते हैं जैसे ही मौका मिलता है वे कसर नहीं छोडते। अपवाद स्वरूप एक या दो प्रतिशत लोग ईमानदार हो सकते हैं और वे भी ऐसे लोग जिनके हाथ में व्यवस्था नहीं है खासकर जिन युवाओं को लेकर अन्ना हजारे खुश होते हैं और अरविन्द केजरीवाल खुश होते हैं यही युवा मौका पाते ही हलाल करने में कोई कोर कसर नहीं छोडते क्योंकि इसके लिए आज की शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है पिछले दरवाजे से नौकरी पाने वाले लोग बिना पढ़े-लिखे ही प्रमाण पत्र पाने वाले लोग जिम्मेदार कुर्सियों में बैठ कर कानून बनाते हैं ऐसे कानून केवल उन पर लागू होता है जिनकी पहुँच सत्ता के गलियारों में नहीं है। भारतीय जनता पार्टी हो या कांग्रेस 'सरकार' किसी की भी आये भ्रष्टाचार कम नहीं हो सकता जब तक मौका न मिले भ्रष्टाचार के स्वाद का अन्दाजा कैसे लगाया जा सकता है मौका मिलते ही कोई भी दल भ्रष्टाचार में सराबोर रहता है। सरकार को नौकरशाह चलाते हैं और उन्हें बदला नहीं जा सकता। अब केन्द्र में युवा ह्रदय सम्राट नरेन्द्र मोदी जी की सरकार बन रही है। उससे देशवासियों को बहुत अधिक उम्मीदें हैं। अब देखना यह है कि यह सरकार कहां तक भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाती है।

कान्ति बल्लभ जोशी
चन्द कलोनी, स्टेशन रोड
टनकपुर
(उत्तराखण्ड)

thearyasamaj.org

आर्यावर्त केसरी वर्गीकृत विज्ञापन कॉलम में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं- व्यवस्थापक

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित

पृष्ठ 120, रंगीन आवरण, उत्तम कागज, आकर्षक कलेवर युक्त विशेष पुस्तक

यज्ञ पद्धति

आर्यपर्वों, जन्मदिन, वर्षगांठ, जयन्ती, उद्घाटन, विमोचन आदि के विशेष मंत्रों के साथ दैनिक व विशेष यज्ञ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ पद्धति पर आधारित

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा

कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०) दूरभाष : 05922-262033

मूल्य : २५/-

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा

द्वारा मुद्रित एक बहुउपयोगी ट्रैक्ट

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान

अपने आर्यसमाज, स्कूल-कालेज के उत्सवों, विशेष पर्वों, विभिन्न समारोहों में वितरण करने हेतु आज ही मंगाएं

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा

कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०), दूरभाष : 05922-262033

मूल्य : दो सौ रु० सैंकड़ा

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बिक्री हेतु उपलब्ध हैं-

- रामायण का वास्तविक स्वरूप

मूल्य- २०/-

- यज्ञ और पर्यावरण

मूल्य- ३/-

पुस्तकों के मुद्रण/ प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक (०५९२२-२६२०३३

संक्षिप्त समाचार

२३ से होगा शिविर

होशंगाबाद। आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.) में 23 से 29 जून तक सप्त दिवसीय उपनिषदीय शिविर होगा।प्रवेश नि:शुल्क है।

यज्ञ महोत्सव ११ से

गुधनी (बदायूं)। आर्यसमाज गुधनी खौंसारा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष किए जाने वाला 'यज्ञ महोत्सव' आगामी 11 से 15 जून तक भव्यता के साथ मनाया जाएगा। आर्यसमाज की विशेष बैठक में निर्णय लेते हुए महोत्सव के निर्देशक आचार्य संजीव रूप ने बताया कि यज्ञ महोत्सव-2014 के अवसर पर 21 कुण्डीय भव्य यज्ञ होगा। 5 दिन तक भंडारा चलेगा। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध राष्ट्रीय वेद प्रचारक आचार्य संजीव रूप ने जनपद भर के लोगों से यज्ञ महोत्सव-2014 में भाग लेने की प्रार्थना की है।

महासम्मेलन सम्पन्न

हापुड़ (राधारमण आर्य)। आर्यसमाज हापुड़ के 124वें स्थापना वर्ष पर आयोजित आर्य महासम्मेलन 26 से 29 अप्रैल तक उत्साह पूर्वक मनाया गया, इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्रि के संध्या समय भजन सम्मेलन हुआ तथा उससे पहले प्रात:काल से दोपहर तक शोभा यात्रा भी निकाली गयी।

पुस्तक समीक्षा सत्यवादी हरिश्चन्द्र

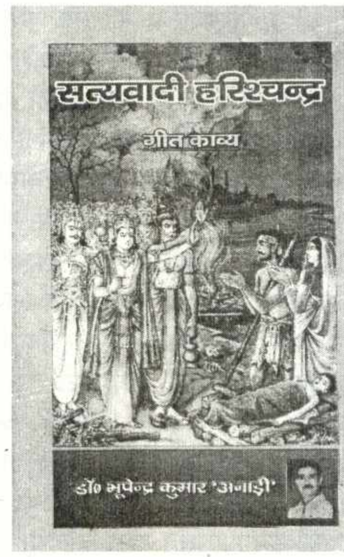

युवा कवि डॉ0 भूपेन्द्र कुमार 'अनाड़ी' द्वारा रचित गीत काव्य 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' लोकगीतों का एक अनूठा संग्रह है, सरस्वती वन्दना, शिव आराधना, होली गीत, हरिश्चन्द्र वंशावली, सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र, दोचश्मी होली, हरिश्चन्द्र और तारा, मुंह फेर हरिश्चन्द्र रोए आदि रचनाओं को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक का नाम : सत्यवादी हरिश्चन्द्र
कवि : डॉ0 भूपेन्द्र 'अनाड़ी'
मूल्य : अध्ययन एवं मनन
प्रकाशक : अमन प्रकाशन, धामपुर जि0- बिजनौर (उ0प्र0)- 24676, दूरभाष : 09719954572/ 9719064630

समीक्षक : रवित कुमार विश्नोई

: नियमित कॉलम का प्रकाशन :

ऐसे होते हैं आर्य

सम्माननीय पाठकवृन्द!

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में **'ऐसे होते हैं आर्य'** नाम से एक नियमित कॉलम शुरु करने जा रहे हैं। अत: प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

प्रहलाद की आस्तिकता

सुमन कुमार 'वैदिक'

हमारे यहां एक राजा हिरण्यकशिपु बड़े वैज्ञानिक हुए। उनके राष्ट्र में विज्ञान की प्रगति अत्याधिक थी। विज्ञान से वह नास्तिकवादी बन गया। उसके हृदय में निष्ठा बन गयी कि परमात्मा कुछ नहीं यह मानव की कल्पना है। प्रजा राजा को ही परमात्मा माने।

इसके विपरीत उसके पुत्र प्रहलाद को बाल्यकाल से परमात्मा में इतनी अधिक निष्ठा बन चुकी थी कि उसने अपने मन में [illegible] धारण कर लिया था कि यह सांसारिक पिता प्रभु नहीं। प्रभु तो कोई और है जो मेरे हृदय की बातों को जानता है जो सर्वज्ञ है, अनुपम सर्वनिन्द सृष्टि कर्ता है। आध्यात्मिक ज्ञान में डूबा प्रहलाद इतना निष्ठावान बन गया कि उसे विश्वास हो गया कि आत्मा चैतन्य है उसे अग्नि, वायु, जल नष्ट नहीं कर सकती। यह शरीर प्रभु की रचना है।

इधर जब राजा को यह ज्ञात हुआ कि तेरा पुत्र तेरा स्मरण प्रजा को भी नहीं करने देता तो उसने पुत्र को नष्ट करने के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये। इस अत्याचारी कार्यों में उसने पुत्र प्रहलाद को सर्पों के बीच में बन्द कर दिया। उस समय ईश्वर विश्वासी प्रहलाद ने कहा कि सर्पराज मानव काम, क्रोध के द्वारा जो विष उगल कर प्रकृति के परमाणुओं को दूषित करता है उस विष को तुम पान करते हैं कि मैं हिंसा, क्रोध काम से दूर एक चेतना हूँ। तुम मुझे कैसे निगलोगे? प्रात: राजा ने देखा कि प्रहलाद परमात्मा का चिन्तन कर रहा है। सब सर्प शान्त [illegible] उसे महान आ[illegible] [illegible]रचय तो हुआ किन्तु तब उसने प्रहलाद को क्रोध में आकर पर्वतों से नीचे गिरवाया। ब्रह्मचर्य और प्रभु विश्वास से प्रहलाद का शरीर बज्र के तुल्य बन चुका था। तब भी उसकी मृत्यु नहीं हुई।

हिरण्यकशिपु की वैज्ञानिक बहन, जो यंत्रों से नाना लोकों में भ्रमण करती थी। उससे राजा ने अपनी चिन्ता प्रकट की कि मेरे राष्ट्र का कार्य शान्त होता जा रहा है। मेरा पुत्र ही मेरा शत्रु बन गया है। मैं उसकी मृत्यु चाहता हूँ। होलिका ने अपने भाई के पुत्र को यन्त्र में अपने साथ बैठा लिया और स्वयं उन औषधियों का शरीर पर लेपन किया जिन औषधियों में यह विशेषता थी कि उन औषधियों के साथ अग्नि में प्रविष्ट होने पर उसके शरीर को नहीं दूसरे को अग्नि जला देती थी। किन्तु वह स्वयं नष्ट होने लगी प्रहलाद जीवित रहा।

उस समय राजा हिरण्यकशिपु के राष्ट्र में क्रान्ति की ज्वाला जनता में आने लगी। राष्ट्र में दो विचार हो गये। प्रहलाद के वि[illegible] नरसिं[illegible] [illegible]चार वादियों ने [illegible] नाम का समाज बनाया और कहा कि प्रहलाद ही हमारा राजा है। हम नास्तिक हिरण्यकशिपु को अपने राष्ट्र में नहीं रहने देंगे। इससे प्रजा में आस्तिकवाद की तरंगे उत्पन्न होने लगी, नास्तिकवाद शान्त होने लगी। नरसिंह समाज में ऐसी महान क्रान्ति आई कि जिसने हिरण्कशिपु के आतंकवाद को नष्ट किया।

(लेख ब्र० कृष्णदत्त जी के प्रवचनों पर आधारित है।)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की विश्व को सर्वोत्तम देन उनके सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थ

मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी दयानन्द प्रचार करते हुए मई, 1874 में जब काशी पधारे तो उन दिनों राजा जय कृष्णदास वहां डिप्टी कलेक्टर थे। आप महर्षि दयानन्द जी के प्रवचन सुनने आया करते थे। यहां एक दैवीय संयोग यह हुआ कि वार्तालाप में राजा जयकृष्णदास जी ने महर्षि दयानन्द जी को कहा – 'आप जो प्रवचन देते हैं उनसे वे ही लोग लाभान्वित होते हैं जो प्रवचन में उपस्थित होते हैं। इसका लाभ उन लोगों को नहीं मिल पाता जो किसी कारण से प्रवचन में नहीं आ पाते। अतः यदि आप अपने सभी विचारों को एक पुस्तक में लिख दें तो इससे उन लोगों को भी लाभ हो सकता है जो आपके प्रवचन में नहीं आ पाते। अन्य स्थानीय लोगों के साथ-साथ दूरस्थ प्रदेशों में रहने वाले लोग भी इससे लाभान्वित हो सकेंगें। इससे आपके विचार व वेदों के सिद्धान्त भी चिरस्थाई हो जायेंगें और इनसे भविष्य में आने वाली भारत सन्तानें भी लाभ उठा सकेगी।' महर्षि दयानन्द को राजाजी की बात जंच गई और उन्होंने तत्क्षण उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हम देखते हैं कि स्वामीजी ने उसके शीघ्र बाद सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को लिखवाना आरम्भ कर दिया जो साढ़े तीन महीनों के रिकार्ड समय में पूरा हो हुआ। आज यह ग्रन्थ विश्व के साहित्य में अपूर्व व वेदों के बाद सर्वोत्तम ग्रन्थ है, जिसकी सहायता से मनुष्य मोक्ष को अपना उद्देश्य व लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने में अग्रसर व सफल हो सकता है।

महर्षि दयानन्द की सभी मान्यताओं व सिद्धान्तों का आधार वेद था। वह वेदों को स्वतः प्रमाण तथा अन्य ग्रन्थों को वेदानुकूल होने पर परतः प्रमाण स्वीकार करते थे। यह स्वाभाविक ही है कि सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान होने के कारण ईश्वर की बनाई कोई कृति दोषयुक्त नहीं होती अपितु पूरी तरह प्राणीमात्र के लिए अनेकानेक प्रकार से लाभदायक होती है। वेद क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान है अतः वेद से बढ़कर अन्य कोई ग्रन्थ व मान्यतायें जो ईश्वरीय ग्रन्थ के विपरीत हों, प्रमाण नहीं हो सकतीं। महर्षि दयानन्द ने जब वेदों का प्रचार प्रसार किया तो श्रोताओं व जिज्ञासुओं, जिन्होंने वेद देखे भी नहीं थे, ऋषि को कहा होगा कि आप वेद दिखाईये और वेदों के अर्थ बताईये। यह मांग किसी एक श्रोता की न होकर सभी जिज्ञासु श्रोताओं की रही होगी। इसके लिए चारों वेदों के भाष्य अर्थात् वेदों के प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी भाषा में अर्थ व भाष्य कर उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता थी। इससे वेदों का स्वरूप, पक्षी व विपक्षी सभी को विदित होने से, सामयिक व दीर्घकालिक लाभ होना भी सुनिश्चित था। स्वामीजी में वेद भाष्य करने की अपूर्व योग्यता थी। अतः उन्होंने वेदभाष्य के कार्य को हाथ में लिया और प्रथम ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका लिखी जो चारों वेदों की भूमिका है तथा जिसमें वेदों के यथार्थ स्वरूप सहित वेद से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों के समाधान वेद मन्त्रों के प्रमाणों से ही किये गये है। सत्यार्थ प्रकाश के बाद चारों वेदों की भूमिका के रूप में लिखा गया यह महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

ज्ञान के क्रम की दृष्टि से चारों वेदों में ऋग्वेद का प्रथम स्थान, यजुर्वेद का दूसरा, तीसरा सामवेद और चौथा अथर्ववेद का है। इन चारों वेदों में क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान मुख्य रूप से वर्णित हैं। अतः स्वामीजी ने भूमिका पूरी कर पहले ऋग्वेद का भाष्य करना आरम्भ किया। अभी कुछ ही कार्य आगे बढ़ा था तो उनके मन में विचार आया कि वैदिक धर्म में जो पराभव हुआ है उसका कारण यजुर्वेद के सत्यार्थ का विलुप्त होना और मिथ्यार्थ का प्रवृत्त होना था। अतः पहले यजुर्वेद भाष्य किया जाना उचित होगा।

अपने प्रबुद्ध अनुयायियों से भी उन्हें ऐसे ही सुझाव मिले। इन सब कारणों से यह निर्णय किया गया कि दोनों वेदों, ऋग्वेद व यजुर्वेद का साथ-साथ भाष्य किया जाये। यजुर्वेद का आकार छोटा होने के कारण यह भाष्य पहले पूर्ण हो गया। ऋग्वेद का भाष्य अभी चल रहा था। ऋग्वेद के कुल 10 मण्डलों में से 7 वें मण्डल के 61 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र का भाष्य ही वह कर पाये थे कि उन्हें एक अज्ञात व बड़े गुप्त षड्यन्त्र के अन्तर्गत विष दे दिया गया जिससे वह रोगी हो गये। रोग की अवस्था में वेद भाष्य का काम रूक गया और 30 अक्तूबर, 1883 को उनकी मृत्यु व मोक्ष हो गया। इस प्रकार ऋग्वेद के कुल 10,552 मन्त्रों में से वह 5,619 मन्त्रों का संस्कृत-हिन्दी भाष्य ही कर सके। इससे आगे का ऋग्वेद के मन्त्रों का भाष्य छूट गया जो उनके अनेक शिष्यों ने पूरा किया जिनमें पं. आर्यमुनि, स्वामी ब्रह्ममुनि, पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार, पं. हरिशरण सिद्धान्तालकार, पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय विद्यामार्तण्ड, पं. क्षेमकरण त्रिवेदी, डा. रामनाथ वेदालंकार, पं. सत्यकाम विद्यालंकार व डा. स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती प्रमुख हैं। सामवेद व अथर्ववेद का भाष्य भी वह अचानक मृत्यु के आ जाने से नहीं कर सके, उस अभाव को भी उनके शिष्य विद्वानों ने पूरा किया। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त आर्याभिविनय, संस्कार विधि, व्यवहारभानु व अनेक लघु ग्रन्थ हैं जिनमें वेदों के सम्बन्ध में उनके व्यापक विचार हमें उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों द्वारा लिखे गये उनके जीवन चरित्र, उनका पत्रव्यवहार, उनके पूना प्रवचनों का संग्रह आदि ग्रन्थ हैं जिनसे वैदिक धर्म पर विस्तार से प्रकाश पड़ता है। धर्म सत्य के आचरण को कहते हैं और महर्षि दयानन्द के सभी ग्रन्थों में धर्म व आचरण का विशद स्वरूप उपलब्ध होता है जो अन्य मत-मतान्तरों, मजहब व सम्प्रदायों में उललब्ध नहीं होता। धर्म के क्षेत्र में उन्होंने तर्क, युक्ति, ऊहापोह, चिन्तन, विचार-विमर्श, वेदादि शास्त्र प्रमाण आदि को अपनाने का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

वह यहां तक विधान करते हैं कि उनका भी यदि कोई विचार या मान्यता वेद की मान्यताओ से विपरीत पाई जायें तो सम्यक् परीक्षा के पश्चात उसका त्याग कर वेद मत व मान्यता को ही स्वीकार किया जाये। वस्तुतः स्वामी दयानन्द सत्य के आग्रही हैं। यह उनका स्वयं का विचार था और इसके पीछे उनके गुरू की आज्ञा व ईश्वर की प्रेरणा भी थी कि सारे संसार के लोग सत्य को जानें, मानें व अपने आचरण में उसे स्थान दें। हम समझते हैं कि संसार में धर्म व विज्ञान दो विद्यायें व विधायें हैं। धर्म की मान्यताओं, सिद्धान्तों व उनके आचरण, प्रयोग व साधना को हम परा विद्या मान सकते हैं तथा विज्ञान अपरा विद्या का क्षेत्र है।

धर्म व विज्ञान में मान्यताओं को लेकर कहीं विरोध नहीं है। वैज्ञानिक ईश्वर को इसलिए नहीं मानते कि वह प्रायः सभी यूरोप में पैदा हुए। वहां का धर्म बाइबिल की शिक्षायें रही हैं। उसमें ईश्वर के जिस स्वरूप का विधान, वर्णन व चित्रण है, वह विज्ञान के अनुकूल, तर्काश्रित व तर्क से सिद्ध नहीं है। वहां ईश्वर को एकदेशी व एक स्थान पर रहने वाला बताया जाता है। वेद व वैदिक धर्म उसे सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, निराकार आदि स्वरूप से सम्पन्न बताता है। हम समझते हैं कि यूरोप के वैज्ञानिकों को वेदों में विहित ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान नहीं है अन्यथा वह इसे स्वीकार कर सकते हैं। वेदों में ईश्वर का जो स्वरूप वर्णित है उससे किसी भी वैज्ञानिक को विरोध नहीं हो सकता। बात प्रयोग से सिद्ध करने की आती है तो वहां भी हमारा आमंत्रण है कि सभी नास्तिक व वैज्ञानिक वेद व योग की शरण में आयें। यम, नियम, आसन व प्राणायाम से आरम्भ करके धारणा, ध्यान व समाधि का अभ्यास करें और फिर देखें कि ईश्वर का अस्तित्व जैसा वैदिक ध र्म में है, वैसा योग के अभ्यास से सिद्ध होता है कि नहीं।

ईश्वर का दर्शन वा साक्षात्कार तो योग द्वारा, ध्यान व समाधि से, होता है इसके अतिरिक्त ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने वाले अनेक प्रमाण वेदानुयायियों के पास हैं और ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाले नास्तिकों के सभी प्रश्नों के समाधान भी वेद के अनुयायियों के पास हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि ईश्वर को न मानने वाले वह सब लोग हमारे शीर्ष विद्वानों की संगति करें तो ईश्वर के अस्तित्व, उसकी सिद्धि व सृष्टि की उत्पत्ति, सृष्टि के संचालन व उसकी निर्धारित अवधि पूरी होने पर प्रलय करने के सिद्धान्त का समाधान भी उनको कराया जा सकता है। ऐसे सभी प्रश्नों का प्रमाण पुरस्सर उत्तर देने के लिए महर्षि दयानन्द का समग्र साहित्य आज हमारे पास है जिसकी सहायता से वर्तमान एवं भविष्य में हमें स्वयं वेदों पर स्थित व स्थिर रहते हुए संसार को इस पर लाना है जिससे अविद्या व अज्ञान दूर होकर सारी दुनियां के लोग, मनुष्य जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष को जानकर उसकी प्राप्ति में वैदिक जीवन व्यतीत करते हुए लक्ष्य को प्राप्त हो सकेगें।

हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों को लिखकर मानव जाति का अकथनीय व अपूर्व उपकार किया है। उनके सभी ग्रन्थ व उनसे सम्बन्धित साहित्य ही उनकी विश्व मानव समुदाय को सबसे बड़ी देन है। संसार के अनेक लोग सत्य की खोज में लगे हुए हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अभी भी अपने स्वार्थ व अज्ञान में फंसे हुए हैं। वेद शत प्रतिशत सत्य ज्ञान के ग्रन्थ हैं। वह आज भी सत्य हैं और प्रलय तक इसी प्रकार सत्य ही रहेगें। उनका आचरण व अनुकरण करने से ही मनुष्य अभ्युदय व निःश्रेयस अर्थात् अपवर्ग को प्राप्त कर सकता है।

यदि वह वेदों व वैदिक सिद्धान्तों को नहीं अपनाता तो वह अपना मानव जीवन असफल करता है। हम आशा करते हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में वह समय भी अवश्य आयेगा जब सारे विश्व में एक सत्य मत व धर्म प्रतिष्ठित होगा और वह और कुछ न होकर महर्षि दयानन्द के विचारों के अनुरूप वैदिक धर्म ही हो सकता है। ईश्वर करे कि वह सारी दुनिया के लोगों के हृदय में सत्य को जानने व उसे प्राप्त करने की प्रेरणा देकर इस उद्देश्य को शीघ्र पूरा करें। महर्षि दयानन्द ने अपने सभी ग्रन्थ लिखकर मानव जाति का सर्वाधिक उपकार किया है।

यह उनकी सारे विश्व को प्रमुख स्थाई सर्वोत्तम देन है। 10 अप्रैल, 2014 को आर्य समाज के आगामी 140वें स्थापना दिवस पर हमारी सभी बन्धुओं को शुभकामनायें एवं बधाई।

196 चुक्खूवाला-2,
देहरादून-248001
दूरभाषः 09412985121

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित

४८ पृष्ठ, रंगीन आवरण, उत्तम कागज

युक्त पुस्तक- **अर्चना यज्ञ पद्धति**

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा,

कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०)

(छः सौ रु० सैंकड़ा)

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा)

प्रवेश प्रारम्भ

योगीराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रजभूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराज महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है।

गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अतः विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण हैं, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है, आर्यजन इसका लाभ उठाकर अपनी संतानों को शिक्षित, सक्षम, संस्कारवान एवं चरित्रवान् राष्ट्रभक्त तथा ऋषिभक्त बनाकर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

-आचार्य हरिप्रकाश प्राचार्य

thearyasamaj.org

ग़ज़ल

डॉ. उर्मिलेश

तू जला वो भी ग़लत था, मैं जला ये भी ग़लत
हौसला वो भी ग़लत था, हौसला ये भी ग़लत
उसने मन्दिर तोड़ डाला तूने मस्जिद तोड़ दी
ज़लज़ला वो भी ग़लत था, ज़लज़ला ये भी ग़लत
बाँटकर जिस्मों को अब वो बाँटने निकले हैं दिल
फैसला वो भी ग़लत था, फैसला ये भी ग़लत
इस सियासत ने हमें हिन्दू-मुसलमां मानकर
तब छला वो भी ग़लत था, अब छला ये भी ग़लत
उसने मेरी जान बख्शी मैंने उसकी ज़िन्दगी
क्या भला वो भी ग़लत था, क्या भला ये भी ग़लत
पहले मज़हब फिर सियासत ने बढ़ाया जो यहाँ
फ़ासला वो भी ग़लत था, फ़ासला ये भी ग़लत
प्यार के उन रास्तों को छोड़कर ऐ, 'उर्मिलेश'
तू चला वो भी ग़लत था, मैं चला ये भी ग़लत

माँ

डॉ० बीना रुस्तगी

माँ दुनिया में अनुपम होती है
अनोखी होती है माँ, सबसे अलग होती है माँ
हर उम्र में बच्चा, बड़ा-बूढ़ा
दर्द में उसे ही बुलाता है
दर्द में डूबी माँ भी पुकार रही थी अपनी माँ को
लगा कितना सुखद था माँ का अहसास
सारे रिश्ते-नाते बेमानी हैं
माँ के आगे कोई रिश्ता नहीं है माँ का सानी
सब कुछ मिल जाता है दुनिया में,
हर रिश्ता नये रिश्तों में तलाश लिया जाता है
पर नहीं तलाशा जा सकता बस माँ का रिश्ता
रक्त की एक-एक बूंद में बसा माँ का रिश्ता
कहाँ-कहाँ कैसे-कैसे महसूस करें इस रिश्ते को
रक्त के गीलेपन में, रक्त की लालिमा में
सच बेचैन हूँ, इस रिश्ते की महानता के अहसास से
टूट सकते हैं सारे रिश्ते, पर नहीं टूटता यह रिश्ता।
सब रिश्तों से इसीलिए बड़ा है माँ का रिश्ता
हर रिश्ता जुड़ता है दुनिया में आने के बाद
जुड़ जाता है माँ से रिश्ता गर्भ में आने के साथ

त्रय विजय-वाहिनी

'देवातिथि' देवनारायण भारद्वाज

बाहर बल विजय बड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।
तुम देश जीत कर आये हो।
पर देह जीत ना पाये हो।
काम क्रोध मद लोभ मोह से,
तुम घड़ी घड़ी घबड़ाये हो।
इनकी हो रही चढ़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।1।।
प्रभुवर ने तीन सन्धियां दीं।
इनके प्रयोग की विधियां दीं।
दृढ़ देह हृदय मस्तिष्क सन्धि,
अंगों में भरकर निधियां दीं।
इनमें आयी अकड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।2।।
थल जल नभ की त्रय सेनाएं।
देह हृदय सिर की महिमाएं।
यदि यही परस्पर लड़ पड़तीं,
कर्म भावना ज्ञान गिराएं।
मिट जाती तब तगड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।3।।
जो यज्ञशेष आहारी है।
प्रभु को अर्पित अविकारी है।
आहुति सेवी जयशील देव,
त्रय सैन्य शक्ति संचारी हैं।
उनकी विजयी अंगड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।4।।
अपने याद पूर्वज कर लो।
उनकी हृदयप्रतिज्ञा धर लो।
वे रहे हराते असुरों को,
उनकी प्रिय आहुतियां वर लो।
श्रुति की यह प्रौढ़ पढ़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।5।।

: स्रोत :

सर्वे देवा अत्यायन्ति ये अश्नन्ति वषट्कृतम्। इमां जुषध्वमाहुति मितो जयत मामुंतः।। सर्वे देवा अत्यायन्तु त्रिषंधेराहुतः प्रियाः। संधां महतो रक्षत ययाग्रे असुरा जितः।।

बस कर्म किये जा

डॉ. सी.एल. वार्ष्णेय

ये जीवन अनमोल खजाना, सन्तों ने इस सच को जाना।
कहने फल यह शुभ कर्मों का, कहीं कभी यह सत्य भुलाना।।
गीता में श्री योगीराज ने, अर्जुन को उपदेश दिया यह।
करो कर्म तजि राग-द्वेष मन, चलो धर्म निज योग दिया यह।।
यह शरीर तो आना-जाना, भ्रमित करे सब नाना-नाना।
कोई नहीं किसी का अपना, है सच्चाई भटक न जाना।।
करो कर्म निष्काम भाव से, परमतत्व का मरम यही है।
यही सत्य है सच पहचानो, कर्म योग का चरम यही है।।
क्या लाये थे जब आये तुम, क्या ले जाओगे साथ कहां?
कृत कर्म तुम्हारे साथी थे, और कर्म रहेंगे साथ वहां।।
कैसे-कैसे निज कर्म किये, बस यही करेंगे निर्धारण।
क्या खोया, क्या पाओगे, यह गणित बड़ा है साधारण।।
क्यों गर्व करो इन महलों पर, कब ढह जायें कुछ कथ्य नहीं।
यह परदा माया-ममता का, मानव-जीवन का सत्य नहीं।।
बस कर्म किये जा करता जो, जनहित के और जनसेवा के।
बस यही रहेंगे साथ वहां, निष्काम कर्म पर सेवा के।।

'काव्य जगत ' स्तम्भ के लिए समसामयिक चेतना व देशभक्ति से परिपूर्ण रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। रचनाओं के साथ कविगण अपना पूरा पता एवं चित्र भी भेजें। -संपादक

डॉ० सुशील कुमार त्यागी 'अमित' की दो कविताएं

देव दयानन्द

बचा लिया इस देश को वेदों वालों ने।
गुरुकुल खोले दयानन्द के लालों ने।।
बालक आया इस दुनिया में,
मूल शंकर जिसका नाम।
शिष्य बन गया विरजानन्द का,
वेद पढ़ाना जिसका काम।।
सकल वेद पढ़ ज्ञान जुटाया,
जगती का अज्ञान हटाया।।
दयानन्द फिर नाम पड़ा था।
गुरुदेव को मान मिला था।।
ऐसा उसने कार्य किया था।
मानव को सत् ज्ञान दिया था।।
था किया परेशान हमें भूचालों ने।
बचा लिया इस देश को वेदों वालों ने।।
दयानन्द ने आकर यहां पर,
अंधकार को दूर किया।
राग-द्वेष से मुक्त लोकहित,
विद्या का भण्डार भरा।।
उसने हमको अमृत देकर,
स्वयं जहर का पान किया।
देशधर्म पर बलि बलि जाओ,
ऐसा अनुपम ज्ञान दिया था।
जगती का उद्धार किया था।।
जहर दिया फिर भी उनको मतवालों ने।।

महर्षि और आर्यसमाज

गौरवता-ताज बांध, शीश आर्यजन आज,
नभचुम्भी श्रेष्ठ आर्यध्वजा फहराये हैं।
परतंत्रता की बेड़ी, तोड़-फोड़ अन्धश्रद्धा,
ढोंग के भी ढोल फोड़, घोरता भगाये हैं।।
सभी जगह फैलायी वेदज्ञान की सुगन्ध,
ऋषि दयानन्द देशहित मन भाये हैं।।
भारत-सपूत आज, आन-बान-शान से है,
सकल समाजगुण, देशदिशि छाये हैं।।

चहुंओर फैल रहा, सौरभ दिनानुदिन,
वेदज्ञान पाकर वेदज्ञ हुए प्राणी है।
मोद उर धारे हुए, कभी हटे पीछे नहीं,
देशहित प्राण तजे, सत्य बलिदानी हैं।।
ये आर्यसमाज आज, प्राणप्रिय सबको है,
घर-घर गूंजी दयानन्द की कहानी है।
हौसले हैं पस्त हुए, हुई पस्त योजनाएं,
झुक गये चरणों में, दुष्ट अभिमानी हैं।।

पूजो सदा एक ब्रह्म, पूजो नहीं दूजे देव,
यह तत्व व्याप्त कर, सच्चा ज्ञान पाते हैं।
इसी की बदौलत आज, स्वयं को जान गये,
जीवन आह्लाद भरा, शांति-गुण गाते हैं।।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम औ अथर्ववेद,
ऋचाओं को आत्मसात् सबके कराते हैं।
ये समाज अग्रसार होता होता हुआ विश्वमध्य,
जोड़ता 'अमित' सत्य संग नेह गाते हैं।।

ऐसे आर्यधर्म को मनन करे जन-मन,
आर्यजन बन गये, सत्य के पुजारी हैं।
आया जो भी सन्निकट, मानव सदैव वही,
सुखानन्दी हुआ अन्य सब ही दुखारी हैं।।
सुविचार संचरित रग-रग मानवों के,
समुन्नत किये लाखों, धर्म उपकारी हैं।
दिव्य आर्य जनता अमरता को धारे हुए,
वैदिक अमित ज्ञान, नित हितकारी है।।

प्राध्यापक-
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर
हरिद्वार

वीरेन्द्र कुमार राजपूत द्वारा विरचित काव्य-मंत्रार्थ

पापों से बचाव

यदवक्तानृतं जिह्वया वृजिनं बहु।
राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादहम्।।
अथर्व (1.10.3)
हे पापलिप्त नर! तू जिव्हा से बोलता है,
नित पाप के वचन अरु नाना असत्य बातें;
इस पाप से तुझे अब कोई न बचा सकता,
तू कर रहा है वाणी द्वारा असंख्य घातें।
मैं तुझको सच्चे न्यायी उस वरुण देव ईश्वर-
की शरण लिए चलता, जो नाशता है रोगा;
जो सर्व दुःख पाशों से सबको छुड़ाता है,
उसकी ही कृपा द्वारा तेरा बचाव होगा।

वीर रस

अभित्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृधत्।
अभित्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि।।
(अथर्व 1.29.3)
हे शूरवीर! दुष्ट शत्रुओं को दबा कर,
सुख और शान्ति हेतु सदा काम किया कर।।
तुझको बढ़ाया सूर्य-देव ने प्रकाश से,
अरु चन्द्रदेव ने तुझे अमृत दे बढ़ाया,
सृष्टि के सभी भूतों ने देकर सहायता,
तुझको किया समर्थ है, तुझको है चढ़ाया।
जिससे तू राक्षसों का हननकर्ता बना है,
इस काम में तू रंच न विराम लिया कर।।

सौरभ सदन, ८, बसन्तकुंज,
३६९/१, बसंत विहार,
फेज-१, देहरादून

तीन कविताएं

प्रकाश प्रजापति

(१)

नेताओं को सुनते-सुनते वर्ष कितने बीत गये,
चुप्पी तोड़ होठ खोल जनता तेरी बारी है।
वायदों का लेखा-जोखा लूट का हिसाब पूछ,
जाग-जाग-जाग अरी चढ़ी क्यों खुमारी है।।
वोट के भिखारी फिर तेरे द्वारे आये देख,
जाँच परख नेता है या मक्कार शिकारी है।
जनता बोल मौन तोड़ सब्र का अब बंधन खोल,
देख तेरी खामोशी में छुपी हर बीमारी है।।

(२)

नैतिकता का नाम नहीं मूल्यों की परवाह नहीं,
कोठे की सलौनी सूरत बनी राजनीति है।
कल तक बाप और कोई आज कोई और बाप,
ऐसे नेताओं की मैया सत्ता की राजनीति है।।
जनता से क्या लेना देना देश की है फिक्र किसे,
भूखे भेड़ियों ने की कब किसी से प्रीति है।
फिर भी जाने तुझे क्या हुआ है री जनता प्यारी,
युग-युग मर कर तू पल-पल जीति है।।

(३)

जोड़ तोड़ चल रहे स्वार्थ हैं मचल रहे,
नारों के ही जाल में फिर फंस रही जनता।
राष्ट्र क्या है नहीं जान रही राष्ट्रवाद क्या है,
धर्म और जाति में फिर बँट रही जनता।
बात इतनी हैं यारों अगर तुम सुन सको,
दलालों के हाथों फिर बिक रही जनता।
समझ तुझे भेड़ बूढ़ी ठग रहे भेड़िये री,
सच को परख जाग फिर प्यारी जनता।।

thearyasamaj.org

स्वतंत्रता संघर्ष के अग्रनायक महर्षि दयानन्द सरस्वती

डॉ० यतीन्द्र विद्यालंकार

19वीं सदी भारतीय इतिहास में विशेष उल्लेखनीय है, क्योंकि इस सदी में दासता व अज्ञानता से त्रस्त भारत में नवजागरण संदेश लेकर भारत माता के रत्नगर्भ से एक महापुरुष श्रृंखला प्रसूति हुई, जिसमें महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है।

महर्षि दयानन्द का नाम आते ही उनके समकालीन भारत की दशा स्वतः जीवन्त हो उठती है। सदियों से पराधीनता के पाश में बंधा भारतीय जनमानस अज्ञानता व दासता के तमस को भेदकर विश्व के बदलते परिदृश्य के साथ खुले आकाश में सांस लेने को आतुर था, लेकिन ब्रिटिश क्रूर शासन, रूढ़िवाद, संकीर्णता तथा कुरीतियों से ग्रस्त भारतीयों के लिए यह असंभव ही था। ऐसे कंटकाकीर्ण कलिकाल में भारतीय मानस पटल पर महर्षि दयानन्द का अवतरण निश्चय ही भारतीय इतिहास की महान स्वर्णिम घटना है, जो वेदोद्धारक, समाज सुधारक, स्वराज्य उद्घोषक तथा प्रचण्ड स्वाभिमानी प्रतीक के रूप में स्थापित होते हैं।

महर्षि दयानन्द का भारतीय धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में अप्रतिम योगदान है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक भारत में नव निर्माण की नींव का आधार महर्षि दयानन्द का महान व्यक्तित्व व विराट कृतित्व है। जब हम भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का गहन अध्ययन करते हैं, तो उसके मूल में महर्षि दयानन्द का महान योगदान परिलक्षित होता है।

महर्षि दयानन्द का 1856 से लेकर 1860 ई० तक का जीवन चरित्र विद्वानों के लिए मौन ही रहा है। स्वराज्य का डिण्डिम घोष करने वाले प्रखर संन्यासी महर्षि दयानन्द भारत की पराधीनता से गहन व्यथित थे। निश्चय ही उनके जीवनकाल का यह अंश सक्रिय स्वातंत्र्य चेतना के रूप में रहा। साहित्य लेखन व सार्वजनिक भाषणों में उनके द्वारा स्वभाषा, स्वराज्य, स्वदेश व स्वधर्म की भावना रह-रह कर मुखरित होती है। अतः इस वास्तविकता को कदापि नकारा नहीं जा सकता कि महर्षि दयानन्द 1857 ई० के स्वातंत्र्य समर में न सिर्फ सक्रिय थे, बल्कि एक मौन साधक के रूप में उसके महान पुरोधाओं में से थे। वीर विनायक सावरकर की पुस्तक '1857 का स्वातंत्र्य समर' के अनुसार इस क्रान्ति को फैलाने में सभी मतों के साधुओं का सक्रिय योगदान था। यह टिप्पणी स्वामी जी के योगदान की पुष्टि करती है। स्वामी सच्चिदानन्द योगी द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द चरित्र में योगी जी ने महर्षि दयानन्द के 1857 ई० की क्रान्ति में योगदान को तार्किकता के साथ प्रस्तुत किया है। बाल गंगाधर तिलक महर्षि दयानन्द को स्वातंत्र्य क्रान्ति का संदेशवाहक के रूप में स्वीकार करते हैं। डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार 'आर्य समाज का इतिहास' के चौथे खण्ड में लिखते हैं कि "हम इस बात की प्रबल संभावना पर विचार कर चुके हैं कि सन् 1857 ई0 की स्वातंत्र्य क्रान्ति में महर्षि दयानन्द व उनके गुरु विरजानन्द दण्डी का सक्रिय योगदान था। बल्कि ये क्रान्ति का विस्फोट करने वाले पुरोधाओं में से थे।" डॉ0 सत्यकेतु आगे लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द उन व्यक्तियों में से थे, जो 1857 ई0 की क्रान्ति से निराश नहीं हुए, बल्कि संग्राम की विफलता पर विचार कर, उन्हें दूर करने व उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न जारी रखने वालों में से थे।

महर्षि दयानन्द समकालीन भारत की दुर्दशा से सर्वथा दुखी थे। अस्मितामयी भारत भूमि पर वैदेशिक दमनकारी शासन से उनका हृदय विदीर्ण था। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में भारतीयों के गौरवशाली अतीत की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं कि "जो आर्यावर्त से भिन्न देश हैं, वह दस्यु तथा

म्लेच्छ कहलाते हैं।" स्वामी जी आगामी पंक्तियों में स्वराज्य की भावना को उग्रता से स्फुटित करते हुए लिखते हैं कि "अब अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य, प्रमाद व परस्पर विरोध से अन्य देशों में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, वह विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है।" ग्यारहवें समुल्लास में स्वामी जी पुनः गौरवशाली अतीत की ओर इंगित करते हैं- "यह निश्चय है कि जितने मत, विद्या, भूगोल में फैले हैं, वह सब आर्यावर्त देश से ही प्रचारित हुए हैं- यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश दुनिया में दूसरा देश नहीं है।"

इसी संदर्भ में स्वामी जी 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' नामक पुस्तक में उदाहरण देकर स्वराज्य के स्वाभिमान को जागृत करते हैं, और लिखते हैं कि "यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उनका घर छीन लेता है, तो वे भी यथाशक्ति प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं।

जनवरी सन् 1873 ई0 में महर्षि दयानन्द व लार्ड नार्थ ब्रुक के मध्य कलकत्ता शहर में भेंटवार्ता का आयोजन रखा गया। वार्ता में लार्ड नार्थ ब्रुक ने स्वामी जी से निवेदन किया कि वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन व सहयोग करें। प्रत्युत्तर में स्वामी जी ने नार्थ ब्रुक को ललकारते हुए कहा कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनीतिक उन्नति तथा संसार के अन्य राज्यों के समान दर्जा पाने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। नार्थ ब्रुक ने यहीं पर अपनी वार्ता स्थगित कर दी, तथा लन्दन स्थित कार्यालय को रिपोर्ट दी कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द देशी रियासतों की आपसी कलह, निरंकुशता व राजाओं की भोग-विलासिता से खासे रुष्ट थे। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने आपसी कलह के दुष्परिणाम एवं अंग्रेजों की 'फूट डालो- शासन करो' की नीति का भण्डाफोड़ करते हुए लिखा कि "जब भाई-भाई आपस में लड़ते हैं, तब तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। स्वराज्य के उत्कृष्ट अभिलाषी, स्वाभिमानी महर्षि दयानन्द ने देशी रियासतों में जा-जा कर राजाओं के स्वाभिमान को ललकारा तथा उन्हें उनके कर्तव्य से परिचित कराया।

महर्षि दयानन्द स्वदेशी, स्वराज्य व स्वभाषा के सर्वप्रथम प्रचारक व समर्थक थे। 'स्वदेशी' शब्द का प्रयोग वह बड़े व्यापक रूप में करते थे। इससे वह अपनी भाषा व संस्कृति को समाहित करते हुए अपनाने पर बल देते थे। 1905-06 ईस्वी में स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ होने से तीस वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने स्वदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया। जब कांग्रेस नेता ब्रिटिश शासन को ईश्वरीय वरदान व दैवीय व्यवस्था समझ रहे थे, उस समय महर्षि दयानन्द स्वराज्य व स्वदेशी की महिमा का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार लिखते हैं- "महर्षि दयानन्द नमक कानून का विरोध करने वाले संभवतः पहले नेता थे। उन्होंने 1875 ईस्वी में प्रकाशित 'सत्यार्थ प्रकाश' में 'नमक-कर' की कड़ी आलोचना की।" इसी संदर्भ में विख्यात इतिहासकार डॉ0 रमेश चन्द्र मजूमदार भी स्वाधीनता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द की भूमिका के बारे में लिखते हैं- "महर्षि दयानन्द का एक प्रधान उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता था। वस्तुतः वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया, तथा जनता का आह्वान किया कि वह भारत में बनी स्वदेशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करें।"

समाज सुधारक, धर्मोद्धारक, स्वराज्य व नवचेतना के प्रतीक महर्षि दयानन्द के विचारों एवं सिद्धांतों ने न केवल भारतवासियों को ही, अपितु विदेशी विचारकों एवं विद्वानों को भी पूर्ण प्रभावित किया। नोबेल पुरस्कार विजेता रोमां रोल्या 'द लाइफ ऑफ रामकृष्ण' में लिखते हैं- "महर्षि दयानन्द भारतीय जनता के उद्धारक एवं राष्ट्रीय चेतना आन्दोलन के शक्ति-पुंज थे।"

यूरोप में जो कार्य बेकन, दस्कार्ते, स्विनोजा, वाल्तेयर आदि विचारकों ने किया, उससे कहीं ज्यादा भारत में महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया है।

मण्डी धनौरा
जि०- अमरोहा

दयानन्द दर्शन

स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर द्वारा प्रकाशित 'दयानन्द दर्शन', से साभार प्रस्तुत :

ऊखीमठ की गद्दी का प्रलोभन

सत्य योग-विद्या के अभिलाषी, कौपीनशेष दिगम्बर परिव्राजक को, अपने अभीष्ट प्राप्ति हेतु किन-किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, यह अकल्पनीय है। ऐसे कठिन समय में सुविधामय जीवन का प्रलोभन साधारण मनुष्य को कर्त्तव्यच्युत् कर देता है। परन्तु दयानन्द साधारण नहीं थे। ऊखीमठ के महन्त ने दयानन्द के गुणों को पहचान कर अपना शिष्य बना लेने व कालान्तर में मठाधीश बना देने का प्रलोभन दिया। इस पर स्वामी जी ने निर्लोभ भाव से कहा- "यदि धन की लालसा होती तो मैं अपने पिता की सम्पत्ति को, जो तुम्हारे इस स्थल, धन धान्य से कहीं बढ़कर थी, न छोड़ता। जिस उद्देश्य के लिए मैंने घर छोड़ा और सांसारिक ऐश्वर्य से मुँह मोड़ा, न तो उसके लिए मैं तुम्हें यत्न करते देखता हूँ और न तुम्हें उसका ज्ञान ही प्रतीत होता है। पुनः तुम्हारे पास मेरा रहना कैसे हो सकता है।"

स्वामी जी की इस बात को सुनकर, वैभव को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाले उस मठाधीश का चकित रह जाना स्वाभाविक था। महन्त ने स्वामी जी के उद्देश्य के बाबत जिज्ञासा प्रकट की तो युवा सन्यासी का उत्तर- "मैं सत्य योग विद्या और मोक्ष चाहता हूँ और जब तक यह अर्थ सिद्ध नहीं होगा तब तक बराबर अपने देशवालों का उपकार, जो मनुष्य पर कर्त्तव्य है, करता रहूँगा।"

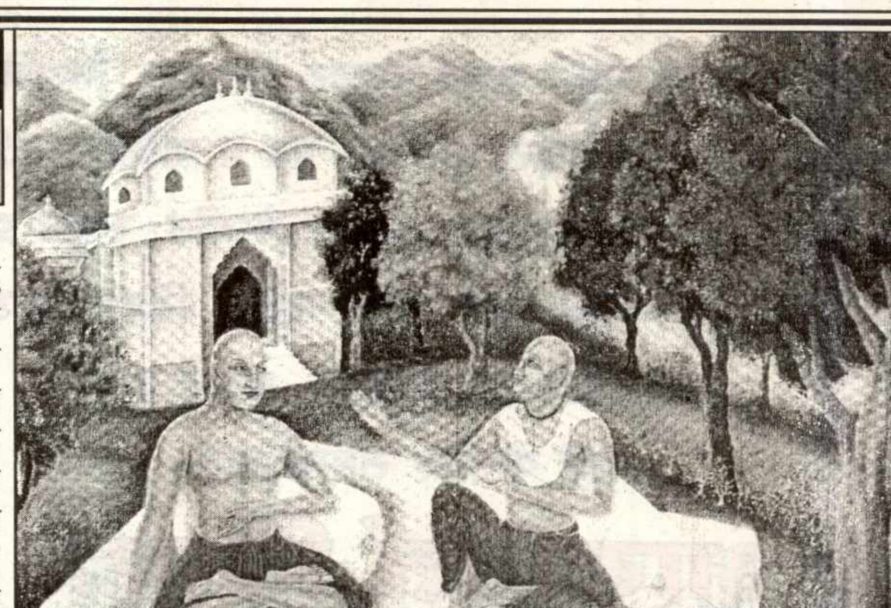

thearyasamaj.org

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्रीमती हेमा पंत

जुलाई 1942 • 22 मई 2008
को सातवीं पुण्यतिथि पर
शतश: नमन
–आर्यावर्त केसरी परिवार

प्रवेश प्रारम्भ

● गार्गी कन्या गुरुकुल, भैयां, चामड़, अलीगढ में कक्षा 6 से प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। एक गौशाला भी संचालित है। प्रवेश की अन्तिम तिथि 30 जून है। सम्पर्क करें- **स्वामी चेतनदेव वैश्वानर** (संचालक),
फोन : 09410426199, 09411879561

● **गुरुकुल अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर (हरियाणा)** में गुरुकुल प्रारम्भ हो चुका है। इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करें- **मुख्याधिष्ठाता- स्वामी धर्ममुनि,**
फोन : 09416054195

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

हमारे नये संरक्षक व आजीवन सदस्य

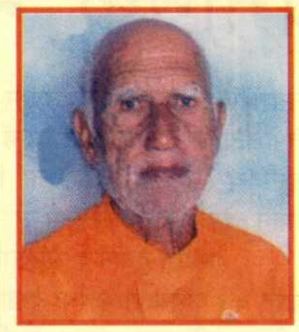

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
अजमेर (राजस्थान)
संरक्षक सदस्य

श्री रामयज्ञ आर्य
भदोही (उ.प्र.)
आजीवन सदस्य

श्री राजेन्द्र प्रसाद (अध्यापक)
वाराणसी (उ.प्र.)
आजीवन सदस्य

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही
आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

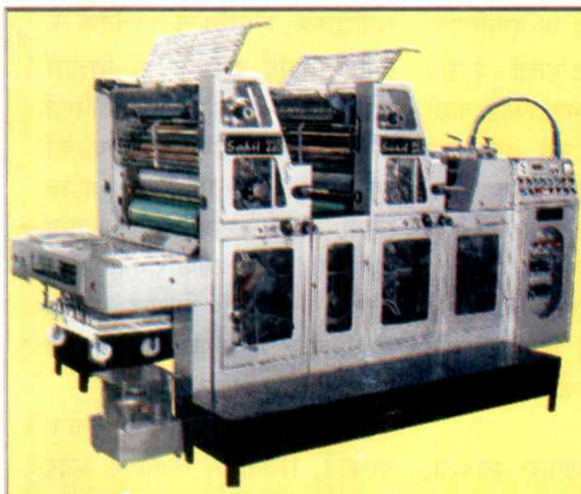

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये **225** में **1000** कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 9758833783, 09758703020, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा के नये प्रकाशन

आज ही ऑर्डर भेजें तथा वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें-

यज्ञ पद्धति-१५/-, अर्चना यज्ञ ज्योति-७/-, रामायण का वास्तविक स्वरूप-२०/-, आर्यजगत के प्रमुख राष्ट्रीय स्तंभ-२०/-, नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती-२०/-, अर्चना यज्ञ पद्धति-७/-, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान-२००/-सैंकड़ा, दयानन्द सप्तक-३००/- सैंकड़ा, यज्ञ और पर्यावरण-२००/-सैंकड़ा।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
Mob. : 09412139333, 09758833783, 08273236003, 05922-262033